ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 35 कुल पृष्ठ-8 2 से 8 सितम्बर, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 भा.कृ.-11

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, अम्बाला कैण्ट, हरियाणा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं वार्षिकोत्सव का हुआ भव्य आयोजन

योगेश्वर श्रीकृष्ण जी के वैदिक स्वरूप को समझना आवश्यक है

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बंगाली मोहल्ला, अम्बाला कैण्ट, हरियाणा के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 29 अगस्त, 2021 (रविवार) को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं प्रसिद्ध युवा विद्वान् डॉ. नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' (औषधि नियंत्रक हरियाणा) के अतिरिक्त अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। प्रातः यज्ञ से प्रारम्भ हुए इस कार्यक्रम में आर्य समाज के धर्माचार्य पं. दयानिधि शास्त्री ने यज्ञ को सम्पन्न कराने के पश्चात् अपने भजनों से उपस्थित श्रोताओं को आह्लादित किया।

इस अवसर पर अपने विद्वतापूर्ण प्रवचन के द्वारा डॉ. नरेन्द्र आहूजा विवेक ने योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र जी के गीता में दर्शाये योग पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि गीता यजुर्वेद के 40वें अध्याय अर्थात् ईशोपनिषद् का ही एक विस्तृत रूप है। योगेश्वर श्रीकृष्ण अप्रतिम व्यक्तित्व एवं प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने **योगः कर्मसु कौशलम्।** सूत्र के द्वारा यह दर्शाया कि योग के द्वारा मनुष्य के कर्म कुशलता से सम्पन्न होते हैं। अतः योग में हम सभी को प्रवृत्त होना चाहिए। डॉ. विवेक जी ने अष्टांग योग की संक्षिप्त व्याख्या भी की और उन्होंने यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि इन सभी अंगों पर बड़ी स्पष्ट और सरल व्याख्या के द्वारा विवेचना की। उन्होंने संकल्प दिलवाया कि हम सभी लोग अपने जीवन को योग से जोड़ें और निष्काम कर्म करने का संकल्प लें। निष्काम कर्म करने वाले व्यक्ति को ही मोक्ष प्राप्त होता है।

अपने ओजस्वी उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने निष्काम कर्म की व्याख्या को और सरल एवं स्पष्ट करते हुए बताया कि मनुष्य को परमात्मा ने कर्म करने का अधिकार दिया है और कर्म करने में वह स्वतंत्र है किन्तु कर्म का फल भोगने में परतन्त्र है। योगेश्वर श्रीकृष्ण गीता में **'कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन्।'** इस श्लोक के माध्यम से यही प्रेरणा दे रहे हैं कि कर्म करने का तुम्हें अधिकार है, किन्तु तुम्हें फल की इच्छा छोड़ देनी चाहिए। फल तुम्हारे आधीन नहीं है। कर्म का फल परमपिता परमात्मा देते है। अतः इस गूढ़ रहस्य को जो व्यक्ति समझ लेगा वह फल में आसक्त होने के बजाय कर्म में ही विशेष प्रयत्न एवं पुरुषार्थ करेगा और ऐसा करने वाला व्यक्ति ही निष्काम कर्म करने वाला समझा जायेगा। मनुष्य के जीवन का यही रहस्य लोगों को समझ नहीं आ रहा और वे कर्म के बदले फल में ही अधिक आसक्ति एवं इच्छा बनाये रखते हैं। स्वामी जी ने बताया कि मनुष्य के कर्म का शुभारम्भ उसके मन में होता है। पहले वह कर्म करने का मन में विचार करता है फिर वही विचार वाणी से और हाथों से कर्म में परिवर्तित हो जाता है, अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा, हम किसी कार्य को मूर्त रूप देते हैं। मनुष्य के इन कर्मों का जो संस्कार बनता है वह मनुष्य के चित्त में जमा होता रहता है। एक प्रकार से मनुष्य के कर्म के संस्कारों की वीडियो फिल्म निरन्तर बनती रहती है। वह जो कुछ सोचता है, जो कुछ देखता है, जो कुछ सुनता है, जो कुछ बोलता है और जो कुछ अपने हाथों या शरीर से करता है इन सभी कर्मों के संस्कार चित्त में इक्ट्ठे होते रहते हैं और पाप तथा पुण्य, अच्छे एवं बुरे दोनों प्रकार के कर्मों का लेखा–जोखा या रिकॉर्ड चित्त में बराबर अंकित रहता है। जब जीवात्मा शरीर छोड़ता है तो सूक्ष्म शरीर जीवात्मा के साथ स्थूल शरीर से बाहर चला जाता है और इसी सूक्ष्म शरीर का एक अंग चित्त है। जिसमें जीवन की सम्पूर्ण स्मृतियों (संस्कारों) का संग्रह अथवा लेखा–जोखा विद्यमान है। इसी लेखा–जोखा के आधार पर जीवात्मा का अगला जन्म तय होता है कि उसे भोग योनि का प्राणी बनना है या कर्म योनि का प्राणी बनना हैं। भोग योनि के प्राणी संसार में समस्त पशु–पक्षी, कीट–पतंग, जीव–जन्तु आदि होते हैं। इन योनियों में जन्म लेने वाली आत्माएँ केवल अपने पूर्व जन्मों के कर्मों का फल भोगती हैं, नया कर्म नहीं करती और जो आत्माएँ मनुष्य के शरीर में आती हैं वे जहाँ पूर्व जन्मों के कर्मों का फल भोगती हैं वहीं नये कर्म करते हुए अपने जीवन को उन्नति के शिखर तक ले जा सकती हैं। इन दोनों प्रकार की योनियों में जिन आत्माओं को जन्म मिलता है, उनका निर्धारण इस वैदिक सिद्धान्त के आधार पर होता है कि जिन आत्माओं के पुण्य 50 प्रतिशत से अधिक हो जाते हैं वे मनुष्य योनि में और जिनके पुण्य 50 प्रतिशत से कम रह जाते हैं उनका जन्म भोग योनि के प्राणियों में होता है। स्वामी जी ने इसको और सरल करते हुए उपस्थित श्रोताओं को प्रेरणा दी कि हम सभी लोग अपने–अपने जीवन पर दृष्टिपात करके अपना आत्मालोचन करें और यह देखें कि हमने अब तक

शेष पृष्ठ 6 पर

सफलता में बाधक होता है हमारा नकारात्मक विश्वास

– सीताराम गुप्ता

हेनरी फोर्ड ने कहा है कि अगर आपको विश्वास है कि आप सफल हो सकते हैं तो आप सही हैं और अगर आपको विश्वास है कि आप सफल नहीं हो सकते तो भी आप सही हैं। हमारा विश्वास ही सफलता प्रदान करता है और हमारा विश्वास ही असफलता प्रदान करता है लेकिन दोनों प्रकार के विश्वासों में अन्तर होता है। एक सकारात्मक विश्वास है तो दूसरा नकारात्मक विश्वास। सकारात्मक विश्वास सफलता प्रदान करने में सक्षम है तो नकारात्मक विश्वास असफलता के लिए उत्तरदायी है। कल ऑफिस जाने के लिए जैसे ही घर से निकले बरसात हो गई और सारे कपड़े खराब हो गये जिससे दिन भर परेशानी होती रही। लेकिन इसका ये अर्थ तो नहीं कि आज भी वैसा ही होगा या हमेशा ही ऐसा होता रहेगा। क्या ऐसा सोचकर ऑफिस जाना ही छोड़ दिया जाये? जहाँ प्रायः रोज बारिश होती है वहाँ भी लोग काम पर जाते ही हैं।

एक बार वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग किया। उन्होंने एक एक्वेरियम में एक बड़ी पाइक मछली को रखा और उसी एक्वेरियम में उसके खाने के लिए कुछ छोटी मछलियाँ रख दीं। जब भी बड़ी पाइक मछली को भूख लगती वो छोटी मछलियाँ खा लेती। कुछ दिनों बाद जब एक्वेरियम में सारी छोटी मछलियाँ समाप्त हो गई तो वैज्ञानिकों ने एक्वेरियम के बीच में कांच की एक दीवार लगा दी और दीवार के दूसरी तरफ पहले जैसी ही छोटी मछलियाँ डाल दीं। अब बड़ी पाइक मछली को जब भूख लगती वो छोटी मछलियों की ओर लपकती लेकिन बीच में कांच की दीवार होने के कारण उससे जा टकराती जिससे हर बार उसे चोट लगती है। कुछ समय तक तो ये सिलसिला जारी रहा लेकिन बार–बार चोट लगने और छोटी मछलियों तक न पहुँच पाने के कारण बड़ी पाइक मछली ने कांच की दीवार के पार तैरती छोटी मछलियों को खाने की कोशिश करना ही छोड़ दिया।

बड़ी पाइक मछली भूख से बुरी तरह व्याकुल थी लेकिन आगे उसने अपनी भूख मिटाने के लिए किसी तरह का कोई प्रयास नहीं किया और चुपचाप एक कोने में जाकर ठहर गई। जब वह भूख के कारण अत्यन्त व्याकुल अवस्था में पहुँच गई तो वैज्ञानिकों ने एक्वेरियम के बीच में लगाई गई कांच की दीवार को हटा दिया। अब बड़ी पाइक मछली आसानी से छोटी मछलियों को अपना आहार बना सकती थी लेकिन उसने ऐसा नहीं किया और कुछ दिनों के बाद वह भूख से तड़प–तड़प कर मर गई। प्रश्न उठता है कि बाद में वहाँ पर्याप्त संख्या में छोटी मछलियाँ होने पर भी बड़ी पाइक मछली ने उन्हें अपना शिकार क्यों नहीं बनाया? वास्तव में पहले अनेक कोशिशों में असफल व घायल होने के कारण बड़ी पाइक मछली ने मान लिया कि अब कोई कोशिश काम नहीं आयेगी। एक नकारात्मक विश्वास के लिए उसकी कंडीशनिंग हो गई और इस नकारात्मक विश्वास ने ही उसकी जान ले ली।

जीवन में हमारे साथ भी कई बार ऐसा ही होता है। हम भी भूतकाल के निराशादायक व दुःखद अनुभवों के कारण नकारात्मक विश्वास से ग्रस्त हो जाते हैं। हमें लगता है कि सफलता अथवा आरोग्य हमारी किस्मत में ही नहीं है। अतः प्रयास करना बेकार है। इसी कारण जब सफलता अथवा उन्नति का कोई अवसर हमारे सामने आता भी है तो उसे गुजर जाने देते हैं। क्यों? क्योंकि हमें विश्वास हो जाता है कि पिछले अनुभवों के विपरीत कुछ नहीं हो सकता और समय के साथ ये विश्वास दृढ़ होता जाता है। इस नकारात्मक विश्वास के लिए हमारी कंडीशनिंग हो जाती है। इसी प्रकार के नकारात्मक विश्वासों के कारण ही हम जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते अथवा उत्कृष्टता से कोसों दूर रह जाते हैं या व्याधियों का उपचार नहीं करते अथवा दवाएँ नहीं लेते। अब प्रश्न उठता है कि इस स्थिति से उबरने के लिए क्या करें?

इसके लिए हमें अपनी नकारात्मक कंडीशनिंग को तोड़ना पड़ेगा। सबसे पहले तो ये बात मन में बिठानी होगी कि हम पाइक मछली नहीं हैं। पाइक मछली कांच की दीवार को नहीं तोड़ सकती लेकिन हम कांच की दीवार रूपी बाधाओं को आसानी से ध्वस्त कर सकते हैं। रुकावटों को समझना और उन्हें दूर करना ही वास्तविक सफलता है। कई बार कुछ अवरोध लंबे समय तक बने रह सकते हैं लेकिन इसका ये अर्थ कदापि नहीं कि ये अवरोध हटेंगे ही नहीं या इन्हें कभी भी पार नहीं किया जा सकेगा। अवरोध हटने या उन्हें पार करने की संभावना कभी समाप्त नहीं होती। हमें धैर्य के साथ उनके हटने की प्रतीक्षा करने के साथ–साथ उन्हें पार करने के लिए कोशिश करते रहना चाहिए। यदि अत्यधिक विषम परिस्थितियों के कारण हम कुछ अधिक नहीं कर पाते तो उन परिस्थितियों के बदलने पर हमें फौरन सक्रिय हो जाना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि हम सतर्क रहकर घटनाक्रम की पूरी जानकारी रखें।

लोहा गरम होने तक इंतजार करें और जैसे ही लोहा गरम हो जाये उस पर चोट करें अर्थात् जैसे ही परिस्थितियाँ अनुकूल हों हम अपेक्षित प्रतिक्रिया करें। हमारी जो प्रारम्भिक असफलताएँ होती हैं वे असफलताएँ ही हमारी सफलता की नींव के पत्थर बनती हैं, इसलिए जरूरी है कि असफलता की पीड़ा को भुलाकर हर बार नए सिरे से प्रयास करने का निर्णय लें। व्यवसाय हो अथवा सम्बन्ध या स्वास्थ्य अथवा रोगमुक्ति जीवन के हर क्षेत्र में यही बात लागू होती है। पहले जिन लोगों को टीबी अथवा क्षय रोग हो जाता था उसकी मृत्यु निश्चित थी, लेकिन आज इस बीमारी का उपचार न केवल पूरी तरह से सम्भव हो गया है अपितु सरल भी हो गया है।

यदि टीबी अथवा क्षय रोग होने पर हम उस समय का हवाला देकर कहें कि इस रोग का उपचार असंभव था और उपचार न करें अथवा बीच में ही छोड़ दें तो इसके लिए कौन दोषी होगा? हमारा नकारात्मक विश्वास ही इसके लिए उत्तरदायी होगा। कई लोग बड़े जिद्दी होते हैं। उन्हें लाख समझाओ लेकिन कहते रहेंगे कि ये काम तो वे बिल्कुल नहीं कर सकते। ये उनके भूतकाल के निराशादायक व दुःखद अनुभवों के कारण भी हो सकता है। कुछ लोग जीवन में बार–बार धोखा खा चुके होते हैं अतः एक तरह से उनका ये विश्वास ठीक भी है लेकिन ये पूरी तरह से नकारात्मक विश्वास है। इसी नकारात्मक विश्वास के कारण वे अपना दृष्टिकोण बदलने को तैयार नहीं होते और जीवन में अनेक संभावनाओं से वंचित रह जाते हैं। जीवन हमेशा संभावनाओं से पूर्ण होता है लेकिन तभी जब हम भूतकाल के निराशादायक व दुःखद अनुभवों से उत्पन्न नकारात्मक विश्वास को अपने अंदर घर न करने दें।

कुछ व्यक्ति जब कोई नया काम करते हैं अथवा कोई नई चीज करना सीखते हैं तो शीघ्र अपेक्षित सफलता न मिलने पर उसे हमेशा के लिए छोड़ देते हैं। जब हम स्कूटर, कार अथवा अन्य वाहन चलाना सीखते हैं तो शुरू में कई समस्याएँ आ खड़ी होती हैं। कई बार वाहन चलाते समय हड़बड़ी में कुछ गलती भी हो जाती है। सही समय पर ब्रेक नहीं लगा पाते अथवा गाड़ी की गति धीमी नहीं कर पाते। ड्राइविंग सीखते समय छोटी–मोटी दुर्घटना भी स्वाभाविक है। यदि ड्राइविंग सीखते समय कोई छोटी–मोटी दुर्घटना हो जाये तो कई लोग उसी वक्त हाथ खड़े कर देते हैं। उनका तर्क होता है कि उनसे फिर कोई दुर्घटना हो जायेगी। ये उनके नकारात्मक विश्वास के कारण ही होता है। नकारात्मक विश्वास उत्पन्न करने में कई बार हमारे अपने कटु अनुभव उत्तरदायी होते हैं तो कई बार हमारे आस–पास के लोग भी इसके लिए कम उत्तरदायी नहीं होते।

जब हम लोगों से बार–बार सुनते हैं कि ये तुमसे नहीं होगा या ये तुम्हारे करने की चीज नहीं है तो हममें नकारात्मक विश्वास उत्पन्न होने लगता है। नकारात्मक विश्वास के कारण कई बार हम सीखी हुई चीज भी भूल जाते हैं। एक घटना याद आ रही है। एक सज्जन ने अपनी भतीजी को कार चलानी सिखाई। पहले एक प्रसिद्ध ड्राइविंग कॉलेज से ड्राइविंग सिखलाई और बाद में स्वयं पर्याप्त अभ्यास करवाया। लड़की कार चलाने में बहुत अच्छी हो गई और स्वयं अकेले ड्राइविंग करने लगी लेकिन लड़की के पिता प्रायः कहते थे कि जब हमारे पास कार ही नहीं है तो सीखने का क्या फायदा? या कहते थे कि किसी दिन ठोक दी तो लेने के देने पड़ जायेंगे। कुछ दिनों में ही लड़की के अन्दर इतना नकारात्मक विश्वास उत्पन्न हो गया कि वो गाड़ी को छूने से भी डरने लगी। जो भी हो हर प्रकार के नकारात्मक विश्वास की कंडीशनिंग से मुक्ति अनिवार्य है क्योंकि इसका जीवन के हर क्षेत्र में बुरा प्रभाव पड़ता है।

कई बार जीवन में मिली लगातार असफलताओं के बाद व्यक्ति प्रयास करना ही छोड़ देता है, लेकिन तभी अचानक एक दिन उसे बड़ी सफलता मिल जाती है। कई लोग इसे किस्मत से मिली सफलता कहते हैं, लेकिन वास्तव में ये पिछले प्रयासों अथवा असफलताओं के अनुभवों के कारण ही संभव हो पाता है। बहरहाल हमें असफलताओं से घबराकर न तो आगे प्रयास करना छोड़ना चाहिए और न ही असफलताओं को दोष देना चाहिए। जब हम किसी शिलाखंड को तोड़ना चाहते हैं तो उस पर जोर से वार करते हैं लेकिन प्रायः पहले वार में पत्थर नहीं टूटता। हम जब तक पत्थर टूट नहीं जाता उस पर हथौड़ा चलाते रहते हैं और इसका कारण है हमारा सकारात्मक विश्वास कि पत्थर अंततः किसी न किसी वार से अवश्य टूट जायेगा। इसलिए जब तक सफलता नहीं मिल जाती तब तक कार्य बीच में छोड़ने की बजाय निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए। परिणाम मिलते अवश्य हैं लेकिन कई बार देर से मिलते हैं। हमें अपेक्षित परिणाम अथवा सफलता मिलने तक धैर्य के साथ अपने कार्य में जुटे रहना चाहिए। जीवन में हर प्रकार की सफलता के लिए असंभव शब्द को मन रूपी शब्दकोष से डिलीट करना अनिवार्य है। नकारात्मक विश्वास से मुक्ति के लिए हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि यदि दुनिया में कोई भी काम कोई भी व्यक्ति कर सकता है तो हम भी उसे अवश्य कर सकते हैं। नकारात्मक विश्वास से बचने के लिए किसी भी कार्य को सीखने के लिए पर्याप्त अभ्यास करें, कार्य को पूरे मन से करें व मन में पूर्ण विश्वास रखें कि मैं कर सकता हूँ। मैं भी सफलता प्राप्त कर सकता हूँ।

चरित्रवान माता–पिता ही सुसंस्कृत सन्तान बनाते हैं

– आचार्य पं. श्रीराम शर्मा

अंग्रेजी में कहावत है –'दि चाइल्ड इज ऐज ओल्ड ऐज हिज एनसेस्टर्स।' अर्थात् बच्चा उतना पुराना होता है जितने उसके पूर्वज। एक बार सन्त ईसा के पास आई एक स्त्री ने प्रश्न किया महाराज! बच्चे को शिक्षा–दीक्षा कब से प्रारम्भ की जानी चाहिए? ईसा ने उत्तर दिया – गर्भ में आने के 100 वर्ष पहले से। स्त्री भौचक्की रह गयी। पर सत्य वही है जिसकी ओर सन्त ने इंगित किया। सौ वर्ष पूर्व जिस बच्चे का अस्तित्व नहीं होता, उसकी जड़ तो निश्चित होती ही है, चाहे वह उसके बाबा हों या पर–बाबा, उनकी मनःस्थिति, उनके आचार, उनकी संस्कृति पिता पर आई और माता–पिता के विचार, उनके रहन–सहन, आहार–विहार से ही बच्चे का निर्माण होता है, कल जिस बच्चे को जन्म लेना है, उसकी भूमिका हम अपने में लिखा करते हैं। यदि यह प्रस्तावना ही उत्कृष्ट न हुई तो बच्चा कैसे श्रेष्ठ बनेगा? मयार्दा पुरुषोत्तम श्री राम जैसे महापुरुष का जन्म रघु, अज और दिलीप आदि पितामहों के तप की परिणति थी, तो योगेश्वर श्री कृष्ण का जन्म देवकी और वसुदेव के कई जन्मों की तपश्चर्या का पुण्य फल था। अट्ठारह पुराणों के रचयिता व्यास का अविर्भाव तब हुआ था, जब उनकी पाँच पीढ़ियों ने घोर तप किया था। अपने यहाँ कन्या के वर ढूँढ़ते समय वर के संयोग और उसकी आर्थिक परिस्थितियाँ पीछे जानी जाती है, सर्वप्रथम वंश–गोत्र से बात प्रारम्भ होती है। उसका मन्तव्य यही होता है कि बालिका किसी दुर्गुण सम्पन्न परिवार में न पड़ जाये। यह सब सन्तति के लिये किया जाता रहा है जो उचित भी रहा है। आज के बच्चे ही कल के नागरिक बनेंगे। कल की सामाजिक सुव्यवस्था, शान्ति, समुन्नति का आधार यह होगा कि हमारे बच्चे श्रेष्ठ, सदगुणी बनें और इसके लिये मातृत्व और पितृत्व को गम्भीर अर्थ में लिये बिना काम नहीं चलेगा।

महाभारत के समय की घटना है – द्रोणाचार्य ने पाण्डवों के वध के लिये चक्रव्यूह की रचना की। उस दिन चक्रव्यूह रहस्य जानने वाले एकमात्र अर्जुन को कौरव बहुत दूर तक भटका ले गये इधर पाण्डवों के पास चक्रव्यूह भेदन का आमन्त्रण भेज दिया। जब सारी सभा सन्नाटे में थी तब 16 वर्षीय राजकुमार अभिमन्यु खड़े हुए और बोले – मैं चक्रव्यूह भेदन जानता हूँ। युधिष्ठिर ने साश्चर्य प्रश्न किया। – तात! मैंने तो तुम्हें कभी भी चक्रव्यूह सीखते नहीं देखा, नहीं सुना। इस पर अभिमन्यु ने हँसकर उत्तर दिया–आर्य! जब मैं अपनी माँ सुभद्रा के पेट में था। माँ को जब प्रसव पीड़ा प्रारम्भ हुई तब मेरे पिता अर्जुन पास ही थे। माँ का ध्यान दर्द की ओर से बँटाने के लिए उन्होंने चक्रव्यूह भेदन क्रिया बतानी प्रारम्भ की। 6 द्वारों के भेदन की क्रिया बताने तक मेरी माँ ध्यान से सुनती रही और गर्भ में बैठा हुआ मैं उसे सीखता चला गया पर सातवें और अन्तिम युद्ध की बात सुनने से पूर्व ही माँ को निद्रा आ गयी, उन्हीं के साथ मैं भी विस्मृति में चला गया उसके बाद मेरा जन्म हो गया। 6 द्वार तो मैं आसानी से तोड़ लूंगा, सातवें में सहायतार्थ आप सब पहुँच जायेंगे, तो उसे भी तोड़ लूंगा।

यह घटना उस सत्य की ओर संकेत करती है कि पुत्र गर्भ में आये उससे पूर्व ही माता–पिता को अपनी शारीरिक और मानसिक तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिए। कुछ दिन पहले अमेरिका में जन्मे एक बालक की बड़ी चर्चा चली, इस बालक की आँखों में 'जे' और 'डी' की आकृति उभरी हुई थीं। वैज्ञानिकों ने उसकी बहुत जाँच की पर कारण न जान पाये, आखिर इस गुत्थी को मनोवैज्ञानिकों ने सुलझाया। युवती ने उन्हें बताया कि मैं अपने विद्याध्ययन काल से ही जान डिक्सन की विद्वता से प्रभावित रही हूँ। मेरी सदा से यह इच्छा रही है कि मेरे जो सन्तान हो वह जान डिक्सन की तरह विद्वान हो। मैंने अपनी यह इच्छा कभी किसी को बताई तो नहीं पर जब–जब इस बात की याद आती मैं अक्सर दीवाल पर, कॉपी पर जे.डी. अक्षर लिखकर अपनी स्मृति को गहरा करती रही हूँ। उन्होंने अपने अध्ययन काल के कई कॉपियाँ और पुस्तकें भी दिखाई जिनमें जे.डी. लिखा मिला।

हमारे पितामह इन तथ्यों से पूर्ण परिचित थे तभी उन्होंने न केवल ऐसी जीवन–व्यवस्था निर्मित की थी जिससे जाति स्वतः ही श्रेष्ठ आचरण वाली सन्तान देती चली जाती थी। गर्भधान को उन्होंने षोड़स संस्कारों में से एक संस्कार माना था और उसे पूर्ण पवित्रता के साथ सम्पन्न करने की प्रथा प्रचलित की थी। बालक का निर्माण माता–पिता भाव भरे वातावरण में किया करते थे और जैसी आवश्यकता होती थी उस तरह की सन्तान समाज को दे देते थे। सती मदालसा ने अपने तीन पुत्रों –विक्रान्त, सुबाहु और अरिदमन को जो शिक्षा–दीक्षा और संस्कार दिये वे पारमार्थिक और पारलौकिक थे, फलतः उन तीनों ने ही प्रौढ़ावस्था में पहुंचने से पूर्व ही संन्यास धारण कर अपना सारा जीवन लोकमंगल में लगा दिया। वह कहा करती –

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि
संसारमाया परिवर्जितोऽसि
संसारस्वप्नं त्यज मोहनिद्रां
मदालसा वाक्यमुवाच पुत्रम्।।

"हे पुत्र! तू अपनी जननी मदालसा के शब्द सुन! तू शुद्ध है, तू बुद्ध है, निरंजन है, संसार की माया से रहित है। यह संसार स्वप्नमात्र है। उठ, जाग्रत हो, मोहनिद्रा का परित्याग कर। तू सच्चिदानन्द आत्मा है, अपने स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर।"

महारानी की शिक्षा से महाराज ऋतध्वज बहुत चिन्तित हुये। उन्होंने मदालसा से कहा यदि ऐसा ही रहा तो राज–काज कौन संभालेगा? इस बार जो पुत्र हुआ तो उसे मदालसा ने राजनीति की शिक्षा दी और कहा –

राज्यं कुर्वन सुहृदो नन्दयेथाः
साधून रक्षास्तात्। यज्ञैर्यजेथाः
दुष्टाग्निघ्नन वैरिणाश्चाजिमध्ये
गोयिप्रार्थे वत्स! मृत्यु व्रजेथाः।
मा.पुत्र 26/41

अर्थात् हे तात! तुम राज्य करो। अपने मित्रों को आनन्दित करो, सज्जन पुरुषों की रक्षा करना, यज्ञ करना, गौ और ब्राह्मणों की रक्षा के लिये युद्ध अनिवार्य हो तो युद्ध भी करना भले ही रणभूमि में तुम मृत्यु को प्राप्त हो।

यह उदाहरण इस बात के प्रतीक हैं कि बालक माता–पिता के शारीरिक और मानसिक साँचे और ढाँचे में ढ़ले, समाज द्वारा, संस्कृति द्वारा संस्कारित मिट्टी के होते है। जैसे हमारे माता पिता होंगे वैसी ही सन्तान, अतएव मातृत्व की जिम्मेदारियों का निर्वाह निष्ठापूर्वक किया जाना चाहिए। श्रेष्ठ आचरण वाले दम्पत्ति ही श्रेष्ठ सन्तान को जन्म देते हैं। माता–पिता दोनों का प्रभाव बच्चे पर अधिक पड़ता है। अतएव उन्हें तो विशेष रूप से तैयारी करनी चाहिये। राम वन गये तब की घटना है, राम ने लक्ष्मण के चरित्र की परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने प्रश्न किया –

पुष्पं दृष्ट्वा फलं दृष्ट्वा दृष्ट्वा योषितयौवनम्।
त्रीणि रत्नानि दृष्ट्वैव कस्य नो चलते मनः।।

हे लक्ष्मण! सुन्दर पुष्प, पके हुये फल और मद–मत्त यौवन देखकर ऐसा कौन है जिसका मन विचलित न हो जाये। इस पर लक्ष्मण ने उत्तर दिया –

पिता यस्य शुचिभूर्तो माता यस्य पतिव्रता।
ताभ्यां यः सूनुरुत्पन्नस्तस्य नो चलते मनः।।

आर्यश्रेष्ठ! जिसके पिता का आचरण सदैव से पवित्र रहा हो, जिसकी माता पतिव्रता रही हो, उसके रज–वीर्य से उत्पन्न बालकों के मन कभी चंचल नहीं हुआ करते।

लक्ष्मण का यह उपदेश प्रत्येक माता–पिता को सोचने के लिए विवश करता है कि यदि श्रेष्ठ सन्तान की आवश्यकता है, तो उसे ढालने के लिए अपना चरित्र साँचे की तरह बनाना चाहिए।

योगीराज श्री कृष्ण का 5223 वाँ जन्मोत्सव सोल्लास सम्पन्न

कुशल राजनेता, कूटनीतिज्ञ व शस्त्र–शास्त्र से परिपूर्ण थे श्री कृष्ण – अनिल आर्य

श्री कृष्ण ने जीवन पर्यन्त कोई बुरा कार्य नहीं किया – हरिओम शास्त्री

सोमवार 30 अगस्त 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में योगीराज श्रीकृष्ण जी का 5223वाँ जन्मोत्सव ऑनलाइन सोल्लास मनाया गया।

वैदिक विद्वान आचार्य हरिओम शास्त्री ने कहा कि आज से लगभग 5222 वर्ष पहले द्वापर युग की समाप्ति पर भारतवर्ष के मथुरा में महात्मा योगीराज श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ था। योगीराज श्रीकृष्ण जी ने वैदिक मर्यादाओं की रक्षा करने हेतु समस्त दुष्टों और अत्याचारी राजाओं का नाश किया, इस क्रम में उन्होंने अपने सगे मामा कंस का भी विनाश कर डाला।

योगीराज श्रीकृष्ण जी ने 'आपत्काले मर्यादा नास्ति' के अपूर्व सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उन्होंने वैदिक शास्त्रों के अनुसार 'श्रीमद्भगवद्गीता' जैसे महान आध्यात्मिक ज्ञान ग्रन्थ का उपदेश अत्यंत कठिन समय में युद्धक्षेत्र से पलायन करते हुए अर्जुन को देकर उसे धर्मयुद्ध हेतु प्रेरित किया। अपने उपदेश का महत्व बताते हुए वे कहते हैं कि– 'सर्वोपनिषदो गावः, दोग्धा गोपालनन्दनः।'

'पार्थो वत्सो सुधीर्भोक्ता', दुग्धं गीतामृतं महत्।।'

अर्थात्–सारी उपनिषदें गायें हैं और उनको दुहने वाला कृष्ण है। उत्तम और तीक्ष्ण बुद्धि वाला अर्जुन उस उपदेश का पान करने वाला बछड़ा है तथा उन उपनिषदों का ज्ञान ही गीता का अमृत दूध है। इसी उपदेश के द्वारा योगीराज श्रीकृष्ण ने आत्मा, परमात्मा, मुक्ति, कर्तव्य–अकर्तव्य, बन्धन, जन्म–मृत्यु, ईश्वर की शरणागति आदि का विस्तृत विवेचन किया है। वे श्री राम जी की तरह पूर्वजों के द्वारा बनाए हुए पथ पर नहीं चलते बल्कि समय और परिस्थितियों के अनुसार स्वयं पथ का निर्माण करते हैं और

उस पर चलते और चलने की प्रेरणा देते हैं। इसीलिए अन्त में वे कहते हैं कि हे अर्जुन –

'सर्वधर्मान् परित्यज्य ममेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षिष्यामि मा शुचः।।'

तुम सभी संशयों को छोड़कर मेरी बात मानो मैं तुम्हें सभी समस्याओं से छुड़ा दूंगा, तुम परेशान न हो। योगीराज श्रीकृष्ण जी के लिए देश और समाज पहले है व्यक्ति और सम्बन्ध बाद में हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में भारत और भारतीयों के लिए श्री कृष्ण जी महाराज के उपदेश बहुत अधिक उपयोगी और लाभप्रद हैं। अतः उनका पालन करने में ही देश का कल्याण है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने कहा कि श्री कृष्ण योगी थे, उन्हें शस्त्र व शास्त्र का पूर्ण ज्ञान था। वह कूटनीतिज्ञ व कुशल राजनेता भी थे। उन्होंने अपने बुद्धि कौशल से राजनीति की नई अवधारणा लिखी। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने श्री कृष्ण के गुणों का वर्णन किया है, वह कहते है कि श्री कृष्ण ने जीवन से मृत्यु पर्यन्त तक कोई बुरा कार्य नहीं किया। उन्होंने विवाह के बाद 12 वर्ष तक पत्नी रुक्मिणी के साथ ब्रह्मचर्य का पालन किया और एक संतान हुई जिसका नाम प्रधुम्न था। उनके साथ राधा का नाम जोड़ना घोर अन्याय है। आज श्री कृष्ण जी के सच्चे स्वरूप को जन–जन तक पहुँचाने की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्र सचदेवा व अध्यक्ष आचार्य अभय देव शास्त्री ने कहा कि उस महान योगी जैसा इतिहास में दूसरा कोई नहीं हुआ है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने श्री कृष्ण जी को महान मित्र, योगी की संज्ञा दी। बहन प्रवीन आर्या, दीप्ति सपरा, प्रवीना ठक्कर, बिंदु मदान, रेखा गौतम, वेदिका आर्या, रवीन्द्र गुप्ता, नरेन्द्र आर्य सुमन, जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, सरदार तरनजीत सिंह भसीन, सोनल सहगल आदि ने मधुर गीत गाये। आचार्य महेन्द्र भाई, राजेश मेहंदीरत्ता, कुसुम भंड़ारी, आशा आर्या, उर्मिला आर्या, आस्था आर्या आदि सम्मिलित रहे।

आर्य समाज थापर नगर मेरठ में श्रावणी उपाक्रम वेद प्रचार एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सोल्लास सम्पन्न

आर्य समाज थापर, नगर मेरठ में श्रावणी उपाक्रम वेद प्रचार एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम अत्यंत उल्लास पूर्ण वातावरण में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। आचार्य शैलेष शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में आहूत देवयज्ञ में मुख्य यजमान श्री नमन मलिक, डॉ कंचन एवं श्री जसबीर मलिक, डॉ मनीषा एवं श्री विरोत्तम तोमर, श्रीमती प्रीति एवं डॉ कपिल सेठ, श्रीमती शिखा एवं श्री ध्रुव अरोड़ा रहे। जन्माष्टमी एवं नमन मलिक के जन्मदिन के अवसर पर विशेष वैदिक मंत्रों की आहुति प्रदान की गई।

जन्माष्टमी कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री राजेश सेठी जी ने कहा कि आर्य समाज योगेश्वर श्रीकृष्ण को वैदिक संस्कृति का आधार स्तम्भ मानता है। हमारे आदर्श गीता का उपदेश देने वाले श्री कृष्ण हैं। जो युद्ध के मैदान में भी अर्जुन को वेदों एवं उपनिषद् के मंत्र 'कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविषतां शमाः।' का उपदेश देते हैं। प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं मोहित शास्त्री ने ईश वंदना एवं योगीराज श्रीकृष्ण के संबंध में अपने भजनों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। "कृष्ण भारतवर्ष की जागी हुई तक़दीर था।" सभी को भाव विभोर कर दिया।

प्रसिद्ध आर्य विद्वान डॉ. वेदपाल जी ने अपने संबोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने योगेश्वर श्रीकृष्ण की प्रशंसा करते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि उन्होंने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जीवन में कोई पाप कर्म नहीं किया। वह आप्त पुरुष थे। परन्तु पौराणिक कथावाचकों ने उन्हें छलिया, चोर शिरोमणि, रसिया एवं जार आदि नामों से संबोधित कर उनके जीवन चरित्र को धूमिल करने का प्रयास किया। योगः कर्मसु कौशलम्। का उपदेश देने वाले श्रीकृष्ण तो हमारे प्रेरणास्रोत हैं।

पूर्व मंत्री एवं सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में कहा कि हम स्वयं को श्रीकृष्ण भक्त कहते हैं तो हम सभी को उनके आदर्शों का पालन करना चाहिए। श्रीकृष्ण जी की केवल एक पत्नी रूक्मिणी थी। उन्होंने सांदिपनि ऋषि के गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की। अर्जुन को युद्ध के मैदान में धर्म एवं निष्कामभाव से कर्म का उपदेश दिया। श्रीकृष्ण स्वयं दैनिक यज्ञ एवं संध्या करते थे। हमें भी उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। हमें अपने जन्मदिन एवं वैवाहिक वर्षगांठ तिथि के अनुसार ही मनानी चाहिए।

श्रद्धेय स्वामी विवेकानंद सरस्वती जी गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल, मेरठ ने आनलाइन के माध्यम से जुड़कर अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि वेदों का प्रचार–प्रसार करने के साथ–साथ योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा दिये गये उपदेशों का अनुगमन करने की प्ररेणा दी।

कार्यक्रम के दौरान आचार्य डॉ. वेदपाल जी को उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा एक लाख रुपए के विशिष्ट सम्मान से सम्मानित किया गया। आर्यसमाज थापर नगर की वरिष्ठतम सदस्या माता कृष्णा कुमारी मल्होत्रा को उनके शतायु होने पर प्रशस्ति पत्र एवं शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। आर्यसमाज थापर नगर के सेवक श्री लाल बहादुर सिंह को आर्य समाज की सेवा कार्य के पचास साल पूर्ण होने पर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आचार्य वाचस्पति जी ने की। मंत्री मनीष शर्मा ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर सर्वश्री अनिल आनन्द, अरविंद कुमार, विकास शर्मा, आशीष सेठी, चंद्रकांत, सुशील बंसल, प्रीति सेठी, कैलाश सोनी, विरेन्द्र मलिक, अपर्णा, राजन खन्ना, सोहन वीर, अशोक सुधाकर, हरवीर सिंह, डॉ. आर. पी. सिंह चौधरी, सुनील आर्य आदि उपस्थित रहे।

– राजेश सेठी

श्रावणी पर्व के अवसर पर वैदिक सभा हरियाणा के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन

तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी का भी हुआ प्रभावशाली व्याख्यान

संस्कृति, संस्कृत एवं मानव निर्माण के लिए उपयोगी वैदिक शिक्षा की रक्षा का लिया गया संकल्प

श्रावणी पर्व के सुअवसर पर वैदिक सभा हरियाणा के तत्वावधान में एक विशेष कार्यक्रम आर्य चौपाल, प्रेमनगर रोहतक, हरियाणा में आयोजित किया गया जिसमें सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी विशेष रूप से आमंत्रित किये गये थे। इस कार्यक्रम का संयोजन वैदिक सभा हरियाणा के संस्थापक एवं संस्कृति, संस्कृत एवं वैदिक शिक्षा की रक्षा के लिए नियमित अभियान चलाने वाले श्री महावीर शास्त्री ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैदिक सभा के अध्यक्ष डॉ. स्वतंत्रतानन्द शास्त्री जी ने की। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ आचार्य वेदमित्र के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। अपने ओजस्वी व्याख्यान में युवा संन्यासी आदित्यवेश जी ने देश के नैतिक पतन के लिए लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली को जिम्मेदार बताया। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी राज्य में लॉर्ड मैकाले को अंग्रेज सरकार ने यह दायित्व सौंपा था कि वह ऐसी शिक्षा प्रणाली लागू करें जिससे भारत की भावी पीढ़ियाँ अंग्रेजियत की मानसिकता से ओत–प्रोत हो सकें। आज व्यवहार में हम देखते हैं कि लॉर्ड मैकाले ने जो शिक्षा पद्धति 1834 में लागू की थी उसका प्रभाव आज देश की युवा पीढ़ी पर स्पष्ट दिखाई देता है। खान–पान, वेशभूषा और मानसिकता की दृष्टि से आज का युवा भौतिकवाद से ग्रसित दिखाई देता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि देश में मानव निर्माण के लिए उपयोगी वैदिक शिक्षा अर्थात् गुरुकुल शिक्षा लागू की जाये। हमारे सभी धर्मग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं। अतः संस्कृत भाषा अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाये। अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाये और उसे ऐच्छिक विषय बनाया जाये। ऐसा करने से ही हम अपनी प्राचीनतम संस्कृति को बचा पायेंगे। स्वामी आदित्यवेश जी ने सभी उपस्थित लोगों से राष्ट्रभाषा हिन्दी में हस्ताक्षर करने का संकल्प दिलाया।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में पाश्चात्य संस्कृति को चुनौती दी और देश के पतन के लिए पाश्चात्य संस्कृति को दोषी बताया। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्वधर्म, स्वभाषा, स्व–संस्कृति, स्वराज्य आदि को राष्ट्र की उन्नति का आधार बताया था। स्वामी दयानन्द जी यह जानते थे कि वैदिक संस्कृति की सुरक्षा तभी सम्भव है जब संस्कृत की सुरक्षा हो और संस्कृति की रक्षा होने पर ही युवा पीढ़ी संस्कारित की जा सकती है। स्वामी आर्यवेश जी ने अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करने की माँग की और उन्होंने कहा कि देश में सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालय में अंग्रेजी में बहस करने का नियम बनाया हुआ है जो गलत है। मेडिकल, इंजीनियरिंग तथा अन्य तकनीकी विषयों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाया जाता है। विभिन्न केन्द्रीय एवं प्रान्तीय स्तर की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता गलत है। अतः देश में हर स्तर पर राष्ट्रभाषा हिन्दी अथवा प्रान्तीय भाषाओं में कार्य होना चाहिए। अंग्रेजी पढ़ने के इच्छुक लोगों को पढ़ने की भले ही छूट दे दी जाये, परन्तु इसको सबके ऊपर कानूनन थोपना सरासर मौलिक अधिकारों का हनन है। देश के आजाद होने के बावजूद देशवासी विदेशी भाषा की गुलामी करे इसका कोई औचित्य दिखाई नहीं देता। आज हमारी समस्त प्रान्तीय भाषाएँ एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा संस्कृत अंग्रेजी की दासी बनकर रह गई हैं। अतः अपनी–अपनी स्व–भाषा की सुरक्षा वर्तमान की आवश्यकता है। स्वामी जी ने सभी लोगों का आह्वान किया कि श्रावणी पर्व के अवसर पर हम सब स्वाध्याय करने का संकल्प लें। प्रतिदिन कम से कम एक वेद मंत्र की व्याख्या अवश्य पढ़ें। आर्ष ग्रन्थों एवं महापुरुषों के जीवन चरित्रों का हम निरन्तर स्वाध्याय करते रहें जिससे हम कभी भटक न सकें। श्रावणी का सीधा सम्बन्ध स्वाध्याय से है और जिस प्रकार किन्हीं परिस्थितियों में रक्षा बन्धन का त्यौहार भी श्रावणी के साथ जुड़ गया उसी प्रकार यह आवश्यक है कि हम यज्ञोपवीत धारण कर अपनी भाषा, संस्कृति एवं शिक्षा की रक्षा का संकल्प लें। जैसे – बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधकर अपनी रक्षा का संकल्प दिलाती है उसी प्रकार श्रावणी के अवसर पर सभी देशवासी यह संकल्प अवश्य लें कि हम अपनी संस्कृति की रक्षा करेंगे और इसी प्रकार रक्षा बन्धन को भी यदि सार्थक बनाना है तो हम सभी उन बहनों या मातृ शक्ति की रक्षा का दायित्व अपने ऊपर लें जिनका सम्मान एवं सुरक्षा खतरे में है। आये दिन हम देखते हैं कि महिलाओं पर अत्याचार, दुष्कर्म एवं बलात्कार की घटनाएँ निरन्तर हो रही हैं। कन्या भ्रूण हत्या एक ज्वलन्त समस्या हमारे सामने मुँह बाये खड़ी है। ऐसी स्थिति में ये सभी कन्याएँ एवं महिलाएँ पुरुष समाज के भाईयों अथवा पिताओं या अपने पतियों से अपनी सुरक्षा का आश्वासन चाहती हैं। क्योंकि रक्षा बन्धन का मतलब अपनी सगी बहन से राखी बंधवाना मात्र नहीं है। रक्षा बन्धन की परम्परा जैसी किंवदंतियाँ प्रचलित हैं उसके अनुसार भाईयों के हाथ पर मेवाड़ की रानी कर्णावती ने राखी बांधी थी जिनका सीधा बहन–भाई का सम्बन्ध नहीं था किन्तु उन्होंने हुमायूँ को राखी भेजकर अपनी सुरक्षा की सहायता मांगी थी। इसी प्रकार हम देखते हैं कि समाज में बहुत सारी महिलाएँ अपने पति के हाथ पर राखी बांधकर यह आश्वासन मांगती हैं कि तुम्हें मेरी सुरक्षा का दायित्व सदैव याद रखना है। इसी प्रकार बहनें भाई के हाथ पर राखी बांधती हैं। शिष्य अपने गुरुओं के हाथ पर राखी बांधते हैं और प्राचीनकाल में विद्वान् ब्राह्मण राजाओं के हाथ पर राखी बांधकर राज्य की रक्षा का व्रत दिलाते थे अतः रक्षा बन्धन का यह त्यौहार व्यापक रूप से हमें सम्पूर्ण नारी जाति के सम्मान के लिए प्रतिबद्ध करता है। अपने राष्ट्र, अपनी संस्कृति, गुरु–शिष्य परम्परा आदि की सुरक्षा की ओर प्रेरित करता है। हम सबलोग अपने–अपने दायित्व को समझते हुए श्रावणी पर्व एवं रक्षा बन्धन के इस त्यौहार को मनायें एवं राष्ट्र में संस्कृति, संस्कृत एवं शिक्षा की सुरक्षा का मजबूत संकल्प लेकर इस दिशा में आगे बढ़ें।

इस अवसर पर एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें 5वीं कक्षा से 12वीं कक्षा तक संस्कृत अनिवार्य रूप से लागू करना। अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कर राष्ट्रभाषा हिन्दी अथवा सभी प्रान्तीय भाषाओं को प्रमुखता देना। मानव निर्माण के लिए वैदिक शिक्षा को धीरे–धीरे पूरे राष्ट्र में लागू करना। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

इस अवसर पर श्री सुशील कुमार एवं श्री पवनजीत ने सुन्दर गीत प्रस्तुत किये। महन्त बसन्तदास जी ने यज्ञ में सहयोग किया। कार्यक्रम में आर्य चौपाल समिति के प्रधान श्री राजवीर सिवाच, आर्य समाज कृपालनगर के प्रधान श्री होशियार सिंह, पूर्व प्राचार्य श्री खजान सिंह गुलिया, मुख्याध्यापक श्री रणधीर सिंह, पूर्व प्रचार्य श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, कानूनगो श्री राज सिंह, श्री महावीर सिंह डांगी, बहन शकुन्तला, श्रीमती कमला, श्रीमती सुमन, श्री ओम प्रकाश जी आर्य वीरदल, श्री शमशेर सिंह नेहरा आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। वैदिक सभा के अध्यक्ष डॉ. स्वतंत्रतानन्द शास्त्री ने स्वामी जी सहित सभी आगन्तुक महानुभावों का हृदय से धन्यवाद किया और शांति पाठ के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, अम्बाला कैण्ट, हरियाणा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं वार्षिकोत्सव का हुआ भव्य आयोजन

पुण्य अधिक किये हैं या पाप। पुण्य कर्मों में परोपकार एवं समस्त प्राणियों के प्रति सद्भाव एवं प्रेम की भावना जीवन में सदाचार एवं सद्कार्य, अपनी वाणी एवं कार्यों में सात्विकता एवं पवित्रता आदि मुख्य रूप से आते हैं और पाप कर्मों में ईर्ष्या, द्वेष, चोरी, असत्य व्यवहार, दूसरे की कमाई पर गिद्ध दृष्टि रखना, औरों की हानि और अपने स्वार्थ के लिए निम्न से निम्न कार्य करने के लिये प्रयत्नशील रहना, कृतघ्नता एवं धोखा देना आदि पाप कर्म में आते हैं। हमलोग यदि इन दोनों प्रकार के कर्मों को भलीभांति समझकर अपने जीवन में शुभ कर्मों का संकल्प ले लेवें और उनको मनोयोग से पूरा करने लगें तो बचे हुए शेष जीवन में हम निश्चित रूप से पुरुषार्थ करके मनुष्य जीवन प्राप्त करने के अधिकारी बन सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि हमलोग गम्भीरता से एवं पूरे विवेक से यह निश्चय कर लें कि भविष्य में हमें प्रयत्न पूर्वक शुभ कार्य, परोपकार के कार्य, यज्ञीय कार्य या प्राणी मात्र की भलाई के कार्य ही करने हैं। कभी मन में भी किसी के प्रति द्वेष, घृणा, हिंसा या उसे शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक कष्ट पहुँचाने का विचार भी नहीं करना चाहिए। ऐसा करने वाले लोग निश्चय ही अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं, सफल बना सकते हैं और मनुष्य योनि को प्राप्त करके उसके द्वारा अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं। मनुष्य जीवन का लक्ष्य पुरुषार्थ चतुष्ट्य है। इसका तात्पर्य है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करना। जो व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करना चाहता है यूँ तो उसके लिए अनेक मार्ग वैदिक ग्रन्थों में दर्शाये गये हैं, किन्तु यहाँ धर्म का आचरण, धर्मानुसार अर्थोपार्जन एवं धर्मानुसार जीवन की कामनाओं की पूर्ति जो व्यक्ति करता है वही मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। हम सब अपना आत्मालोचन करें और देखें कि हम इन कसौटियों पर कितना खरा उतर रहे हैं। यदि कहीं त्रुटि दिखाई देती है तो उसे तुरन्त प्रभाव से दूर हटाकर अपने जीवन में सात्विकता, पवित्रता, धार्मिकता एवं अन्य आवश्यक गुणों को अपनाना शुरू करें।

स्वामी आर्यवेश जी ने मनुष्य जीवनोपयोगी उपदेश देने के उपरान्त योगेश्वर श्रीकृष्ण के वैदिक स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योगीराज श्रीकृष्ण का जीवन आप्त पुरुषों के समान था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा है कि – ''देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्योत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मृत्यु–पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा है, परन्तु इन भागवत वालों ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं।'' योगेश्वर श्रीकृष्ण इस दुनिया के एक मात्र ऐसे महापुरुष थे जिनके जन्म लेने से पूर्व उनकी मौत के आदेश हो गये थे। आप सभी जानते हैं कि निरंकुश शासक और योगेश्वर श्रीकृष्ण के मामा कंस ने यह घोषित कर दिया था कि उनकी बहन के पेट से जो बच्चा जन्म लेगा वह मेरा शत्रु होगा और मैं उसे जीवित नहीं रहने दूँगा। आप सबको विदित है कि योगेश्वर श्रीकृष्ण का जन्म जेल में हुआ था और येन–केन–प्रकारेण श्रीकृष्ण जी को जेल से बाहर निकाल लेने में उनके पिता वासुदेव ने सफलता प्राप्त कर ली थी। कालान्तर में योगेश्वर श्रीकृष्ण, संदीपन ऋषि के उज्जैन स्थित गुरुकुल में अध्ययन एवं शस्त्र विद्या सीखने के उपरान्त जब बलराम के साथ मथुरा लौटे तो कंस के दरबार में हड़कम्प मच गया था और कंस ने उनके वध की योजना बनानी प्रारम्भ कर दी थी। योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ने भी देखा कि मथुरा के चारों तरफ समाज को पूरी तरह से विघटित करके वहाँ पर बने हुए समस्त यादव संघों को छिन्न–भिन्न करके कंस इतने अत्याचार कर रहा था, जिनसे लोग बड़े परेशान और व्याकुल थे। योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ने भी मन में ठान ली थी कि जब तक कंस की हत्या नहीं हो जायेगी तब तक मथुरा नगरी और इसके चारों ओर के क्षेत्र में शांति स्थापित नहीं हो सकती। कंस ने अपनी कुटिल योजना को मूर्त रूप देने के लिए श्रीकृष्ण जी के पास एक प्रस्ताव भेजा और कहा कि आप दोनों (बलराम और कृष्ण) गुरुकुल के स्नातक बनकर आये हो, आपने वहाँ पर मल्ययुद्ध आदि का प्रशिक्षण भी लिया होगा, यदि आप चाहें तो एक दिन मथुरा नगरी के लोगों के बीच अपनी कुश्ती का शौर्य दिखा सकते हैं। श्रीकृष्ण जी तो इस अवसर की तलाश में ही थे और उन्होंने निश्चय कर लिया कि इस अवसर को हाथ से न जाने दिया जाये और कुश्ती करने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। कुश्ती का दिन निश्चित हो गया। बलराम और कृष्ण से लड़ने वाले दो पहलवान जो कंस के चहेते थे जिन्हें कंस ने खूब माल–मलिदा खिलाकर तैयार किया हुआ था, मुष्टिक व चाणूर नामक दोनों पहलवानों को कंस ने तैयार कर दिया और उन्हें स्पष्ट आदेश दे दिया कि तुम्हें बलराम और कृष्ण को कुश्ती में ही नहीं हराना है बल्कि उनका काम–तमाम भी करना है। इधर कृष्ण जी ने बलराम को समझा दिया कि तुम्हें जिस पहलवान से कुश्ती करनी है उसको केवल कुश्ती में चित्त ही नहीं करना बल्कि उसको मौत के घाट पहुँचाना है। कुश्ती होने लगी। पहले बलराम की मुष्टिक से कुश्ती हुई बलराम ने उसको बहुत थोड़े समय में रौंद डाला। उसको चित्त तो कर ही दिया साथ ही उसकी गर्दन पर घुटना मारकर उसका प्राणान्त भी कर डाला। योगेश्वर श्रीकृष्ण की कुश्ती चाणूर से हुई और श्रीकृष्ण जी ने भी उसी प्रकार चाणूर को न केवल हराया बल्कि उसको भी मृत्यु शैय्या पर पहुँचा दिया। यह देखकर कंस घबड़ा गया और वह वहाँ से उठकर भागने लगा। किन्तु कृष्ण जी ने दौड़कर उसे गर्दन से पकड़ा और खींचकर हजारों दर्शकों के बीच में ले आये उसको जमीन पर पटककर यमलोक को पहुँचा दिया। योगेश्वर श्रीकृष्ण का यह पक्ष उनकी वीरता, उनकी शक्ति, उनके आत्मबल, उनकी बुद्धिमत्ता, उनकी नीतिमत्ता और जनता के प्रति उनके प्रेम एवं संवेदना को दर्शाता है। वह प्रारम्भ से ही अन्याय के विरुद्ध लड़ने का प्रशिक्षण लेकर आगे बढ़े थे।

महाभारत के युद्ध में योगेश्वर श्रीकृष्ण की भूमिका सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण रही। प्रारम्भ में महाभारत को टालने के लिए, युद्ध को न होने देने के लिए उन्होंने भरसक प्रयत्न किये। दुर्योधन को अनेक तरीके से समझाने के प्रयास किये। न्यून से न्यून पाँच गाँव पांच पाण्डवों को देकर सम्पूर्ण राज्य के मालिक बन जाने का प्रस्ताव भी उन्होंने रखा किन्तु दुर्योधन का अहंकार और शकुनि के षड्यन्त्रों के कारण योगेश्वर श्रीकृष्ण के ये सभी प्रयत्न निष्फल हो गये। अन्त में महाभारत का युद्ध होकर ही रहा और उस युद्ध में पाण्डवों की जीत सुनिश्चित कराने में हर कदम पर उन्होंने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने यद्यपि अपनी सेना दुर्योधन को दी किन्तु स्वयं अर्जुन के सारथी बने, यह भी उनकी कुशल नीति का एक उदाहरण है। कहने का तात्पर्य यह है कि योगेश्वर श्रीकृष्ण ने अपनी पूरी आयु अन्यायी, आततायी, अहंकारी एवं अत्याचारियों से संघर्ष करने में बिताई। अधर्म के विरुद्ध न केवल अपने विचारों से लोगों को प्रेरित किया बल्कि जब जरूरत पड़ी तो स्वयं भी सुदर्शन चक्र उठाने से नहीं चूके। (भले ही उन्होंने महाभारत में शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा की हुई थी।) आज उसी कृष्ण को लोग एक तरफ तो भगवान का अवतार मानते हैं और दूसरी ओर उसी उनके ऊपर निम्न स्तर के लांछन लगाकर अपमानित करते हैं। कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर जिस तरीके के कार्यक्रम आयोजित होते हैं उनमें रासलीलाओं के माध्यम से अश्लील, असभ्य एवं फूहड़ किस्म के नृत्य, शराब पी–पीकर रातभर अश्लील और गन्दे गानों का कार्यक्रम मुख्य रूप से देखने को मिलता है। श्रीकृष्ण जी को कहीं हम माखन चोर, कहीं छलिया, कहीं स्त्रियों के कपड़े चुराने वाला, कहीं सोहल हजार एक सौ आठ रानियों (गोपियों) का पति, कहीं 24 घण्टे रति कर्म में लीन देवता के रूप में प्रदर्शित करके लांछित करते हैं और कृष्ण जैसे महान योगी, महान योद्धा, महान नीतिज्ञ, उच्च चरित्र से विभूषित व्यक्तित्व को घटिया आरोपों से तिरस्कृत करते हैं। यह कैसी कृष्ण भक्ति है? दुनिया के लोग जब इन सब बातों को देखते और सुनते हैं तो वे आश्चर्य करते हैं कि ये भारत के लोग कैसे हैं जो इतने महान इतिहास पुरुष को जिसे वे ईश्वर का अवतार कह रहे हैं उस पर इतने निम्न स्तर के लांछन लगाकर वे उसकी भक्ति कर रहे हैं या उसको बदनाम कर रहे हैं।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वर्तमान समय में प्रायः देखने को मिलता है कि श्रीकृष्ण जी के साथ राधा शब्द जरूर जुड़ा होता है और हर जगह राधे–राधे या राधा–कृष्ण बोलकर लोग ताली बजाकर कृष्ण जी की प्रशस्ति करते हैं, किन्तु कितनी विडम्बना की बात है कि भागवत पुराण, विष्णु पुराण आदि में कहीं भी राधा का कोई वर्णन नहीं आता तो फिर यह राधा नाम की औरत कृष्ण जी के जीवन में कहाँ से आ गई, किसने उनके साथ षड्यन्त्र पूर्वक राधा का नाम जोड़ दिया यह सोचने की बात है। कृष्ण जी का विवाह रुक्मणि के साथ हुआ था किन्तु रुक्मणि का नाम कहीं भी उनके साथ नहीं जोड़ा जाता। यह कृष्ण जी के ऊपर सबसे घिनौना लांछन है, जिसका इस पूरे पौराणिक जगत के पास कोई उत्तर नहीं है। ये लोग राधे–राधे कहकर लोगों को पागल बना रहे हैं किन्तु उनके पास यह प्रमाण नहीं है कि राधा शब्द कहाँ से जोड़ लिया। जब यह न पुराणों में है और न किसी और ग्रन्थ में आता है। राधा नाम ब्रह्मवैवर्त पुराण में एक जगह आया है और वह कृष्ण जी के मामा रायन की धर्मपत्नी के रूप में है। आप सोच सकते हैं कि उनके रिश्ते में मामी लगने वाली महिला उनके साथ कैसे और क्यों दिखाई जाती है?

पिछले दिनों भारत के सर्वोच्च न्यायालय में लिव–इन–रिलेशनशिप का एक मुकदमा आया और उसमें लिव–इन–रिलेशनशिप का समर्थन करने वाले वकील ने बहस में यह तर्क दिया कि जब भगवान श्रीकृष्ण राधा के साथ लिव–इन–रिलेशनशिप में रह सकते हैं तो फिर अन्य कोई व्यक्ति क्यों नहीं रह सकता। जज ने दूसरे पक्ष के वकील से इस सम्बन्ध में जवाब देने को जब कहा तो उसके पास कोई उत्तर नहीं था। उस समय जरूरत थी इस बात की कि आर्य समाज का कोई विद्वान् वकील वहाँ खड़ा होता और वह यह स्पष्ट करता कि कृष्ण जी का राधा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था और न ही किसी ग्रन्थ में ऐसा वर्णन मिलता है। दूसरी ओर कृष्ण जी का जीवन इतना उच्चकोटि का पवित्र और तपस्वी था कि उनके सम्बन्ध में ऐसी कल्पना करना भी बहुत बड़ी मूर्खता होगी। किन्तु दुर्भाग्य है कि देश और दुनिया में कृष्ण जी के सम्बन्ध में ये सब निराधार, तथ्यहीन, निम्न स्तर की बातें प्रचलित एवं प्रचारित हैं। लोग कृष्ण जी के हाथ में बंशी देकर, पैरों में घुंघरू बांधकर गोपियों के बीच में नचाते हैं और ऐसा दर्शाते हैं कि योगेश्वर श्रीकृष्ण तो एक नाचने–गाने वाले व्यक्ति ही रहे होंगे। मैं यहाँ पर यह भी स्पष्ट करना चाहता हूँ कि चोर शब्द का क्या अर्थ होता है – चोर उसे कहते हैं जो किसी की वस्तु को उसके बिना पूछे छिपकर उठा ले, वह चोर होता है। भारत या दुनिया के अन्य देशों में भी चोर को उसके कृत्य के लिए दण्डित किया जाता है, चोर को एक बड़ा अपराधी माना जाता है। किन्तु आश्चर्य की बात है कि योगेश्वर श्रीकृष्ण जी को हम सभी कृष्ण भक्त बड़े आराम से माखन चोर कहकर सम्बोधित करते हैं और फिर ये कथावाचक लोग उस माखन चोर शब्द की अपने तरीके से व्याख्याएँ करके इस शब्द को कृष्ण जी के साथ चिपकाये रखते हैं। मैं पूरे दावे से कहता हूँ कि कृष्ण जी चोर नहीं थे, न वे माखन चुराते थे और न ही वे स्त्रियों के कपड़े चुराते थे और न ही वे किसी प्रकार की चोरी करते थे। अतः उनके साथ माखन चोर शब्द लगाना बन्द होना चाहिए। गीत बना रखे हैं – 'मनिहारी का वेश बदलकर कृष्ण चूड़ी बेचने आये।' इस गीत को लिखने वाले और गाने वाले लोगों को यह शर्म नहीं आती कि इतने बड़े महापुरुष के बारे में वह क्या बोल रहे हैं। क्या कृष्ण जी बहुरूपिये थे जो वेश बदलकर स्त्रियों के बीच में जाते थे और उन्हें चूड़ी पहनाते थे। क्या कृष्ण जी छलिये थे जो छल करके चूड़ी बेचने जाते थे। छलिया कौन होता है – जो छद्मरूप से, घुसपैठ करके, धोखा देकर, छल, कपट करके अपनी मनोवांछित इच्छाओं की पूर्ति करता हो। क्या कृष्ण जी ऐसे थे? आज यह सारे प्रश्न सम्पूर्ण हिन्दू समाज के सामने मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ और कृष्ण जी के सम्बन्ध में जितनी भी बेबुनियाद, निराधार, तथ्यहीन, असत्य एवं अश्लील बातें कही जा रही हैं उनके नाम पर होने वाली रासलीलाओं में शराब पीकर कृष्ण जी को गोपियों के बीच नचाना और अश्लील गाने बन्द होने चाहिए। यदि ऐसा होगा तो योगेश्वर कृष्ण को सही मायने में हमलोग पूरे संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष का स्थान दे पायेंगे और उनके जीवन से विशेष प्रेरणा ले सकेंगे। मैं आशा करता हूँ कि प्रबुद्ध एवं विचारशील लोग इन सब बातों पर अवश्य विचार करेंगे और वर्तमान में चल रही अनर्गल, तथ्यहीन बातों पर रोक लगायेंगे।

स्वामी आर्यवेश जी के उद्बोधन के बाद आर्य समाज की विदुषी प्रधाना आदरणीया बहन विजय गुप्ता जी जो मंच का बड़ी कुशलता के साथ संचालन कर रही थीं, उन्होंने स्वामी जी के उद्बोधन पर टिप्पणी करते हुए कहा कि हमने जिस भावना से पूज्य स्वामी जी महाराज को आज के इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया था उसे उन्होंने अक्षरशः पूरा कर दिया और उन्होंने अपने ओजस्वी उद्बोधन से हमारी आत्मा को झकझोर दिया है और मैं ऐसा अनुभव करती हूँ कि अगले एक वर्ष तक हम उनके व्याख्यान से ऊर्जा लेते रहेंगे और योगेश्वर श्रीकृष्ण जी के सम्बन्ध में समाज में व्याप्त भ्रांतियों को अवश्य दूर करने का प्रयास करेंगे। उन्होंने स्वामी जी का विशेष आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी आर्य समाज में आने का स्थाई निमंत्रण दिया। उन्होंने स्वामी आदित्यवेश जी जिन्होंने कुछ महीनों पूर्व ही युवावस्था में संन्यास की दीक्षा ली है उनका भी विशेष अभिनन्दन किया और उनके आगमन का आभार जताया। डॉ. नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' का भी उन्होंने विशेष धन्यवाद किया और आग्रह किया कि वे हमारी समाज पर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखेंगे। विद्यालय की कुछ छात्राओं ने गीता के श्लोक भी सुनाये और उन्हें स्वामी जी के कर–कमलों द्वारा पारितोषिक प्रदान करवाये गये।

इस अवसर पर सर्वश्री डॉ. विवेक कोहली प्रिंसिपल डी.ए.वी. सोहनलाल शिक्षा महाविद्यालय अम्बाला शहर, राज कुमार गर्ग मंत्री, सुनील गुप्ता कोषाध्यक्ष, ओ. पी. सिंगला उपप्रधान, श्रीमती शकुन्तला मदान महिला समाज प्रधाना, श्रीमती मंजू आहूजा, डी. एन. दिवाकर, नवीन शर्मा, सुरेन्द्र कुमार, मनोज शास्त्री धर्माचार्य आर्य समाज मॉडल टाऊन, देशबन्धु आर्य, ऋषिराज शास्त्री एवं डॉ. अनुपमा आर्या प्रिंसिपल आर्य कॉलेज अम्बाला छावनी आदि महानुभाव उपस्थित थे। श्री महेश आर्य ने कार्यक्रम में स्वामी जी को आमंत्रित करने एवं अन्य व्यवस्थाओं में अपना भरपूर योगदान देकर विशेष भूमिका निभाई। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीति भोज का सुन्दर प्रबन्ध किया गया था। ●

आर्य समाज के विश्वविख्यात संन्यासी, मानव अधिकारों एवं सामाजिक न्याय के पुरोधा बेजुबान बंधुआ मजूदरों के मसीहा पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में 11 से 21 सितम्बर, 2021 तक देश के विभिन्न भागों में कार्यक्रम होंगे आयोजित

मुक्त बंधुआ मजदूरों को किया जायेगा सम्मानित

विश्वविख्यात आर्य संन्यासी, मानव अधिकारों एवं सामाजिक न्याय के पुरोधा, बेजुबान बंधुआ मजदूरों के मसीहा और पूरे विश्व में दासता, अन्याय, असमानता एवं शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करने वाले स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि 11 सितम्बर, 2021 को दिल्ली में एक विशेष स्मृति सभा के रूप में मनाई जायेगी, उसके पश्चात् 12 सितम्बर से 20 सितम्बर, 2021 तक हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश सहित अन्य प्रान्तों में भी स्मृति सभाओं का आयोजन किया जायेगा। 21 सितम्बर 'विश्व शांति दिवस' एवं स्वामी अग्निवेश जी के जन्मदिवस के अवसर पर अग्निलोक आश्रम दमदमा रोड, ग्राम–बहलता,

जिला–गुरुग्राम, हरियाणा में विशेष स्मृति सभा आयोजित होगी। इन सभी कार्यक्रमों में विशेष रूप से उन मुक्त बंधुआ मजदूरों को सम्मानित किया जायेगा। जिन्हें स्वामी अग्निवेश जी ने गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराकर आजादी का जीवन जीने का अवसर प्रदान किया और उन्हें पुर्नवासित करवाया। इन कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा की जानकारी प्राप्त करने के लिए बंधुआ मुक्ति के केन्द्रीय कार्यालय – 7, जन्तर–मन्तर रोड, नई दिल्ली के दूरभाष नम्बर–011–23367943 पर सम्पर्क करके आप अपने निकट आयोजित होने वाले कार्यक्रम में सम्मिलित होवें और स्वामी अग्निवेश जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके संघर्षों से प्रेरणा प्राप्त करें।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश
अध्यक्ष

प्रो. विट्ठलराव आर्य
संयोजक

स्वामी अग्निवेश स्मृति आयोजन समिति

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

मात्र 3100/– में

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर

लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष : 011–23274771

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

गुरुकुल धीरणवास, जिला–हिसार (हरियाणा) का स्थापना दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज के युवा तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी को गुरुकुल धीरणवास, जिला–हिसार (हरियाणा) का सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया

पौराणिक ग्रन्थों तथा कथावाचकों ने योगेश्वर श्रीकृष्ण के स्वरूप को बिगाड़ा – स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल धीरणवास, जिला–हिसार (हरियाणा) का स्थापना दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम समारोह पूर्वक दिनांक 30 अगस्त, 2021 को गुरुकुल के प्रांगण में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विद्या आर्य सभा गुरुकुल धीरणवास के साधारण अधिवेशन में आर्य समाज के युवा तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी को सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित किया गया। अधिवेशन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान एवं गुरुकुल के कुलपति स्वामी आर्यवेश जी ने की। एक प्रस्ताव के द्वारा नव–निर्वाचित प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी को अन्तरंग एवं कार्यकारिणी बनाने का सर्वसम्मति से अधिकार दिया गया। अधिवेशन में सर्वसम्मति से वरिष्ठ आर्यनेता चौ. हरिसिंह सैनी जी को गुरुकुल का संरक्षक चुना गया। चुनाव की इस प्रक्रिया के उपरान्त उपस्थित गणमान्य सदस्यों ने स्वामी आदित्यवेश जी तथा चौ. हरि सिंह सैनी जी का जोरदार स्वागत किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने नव–निर्वाचित प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी को बधाई एवं शुभकामना देते हुए कहा कि स्वामी आदित्यवेश जी अपना पूरा जीवन आर्य समाज के कार्यों के लिए समर्पित करके स्वामी दयानन्द जी के मिशन को पूर्ण करने में प्राण–पण से जुटे हुए हैं। उन्होंने आर्य जगत के तेजस्वी संन्यासी, महान नेता, युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 84वें जन्मदिवस के अवसर पर 13 मार्च 2021 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक में संन्यास की दीक्षा लेकर उत्कृष्ट त्याग का परिचय दिया। एक युवा नेता, तेजस्वी, कर्मठ एवं समर्पित नवयुवक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी ने संन्यास की दीक्षा लेकर आर्य समाज में एक नये उत्साह का संचार कर दिया है। ब्र. दीक्षेन्द्र जी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान व मिशन आर्यावर्त न्यूज चैनल के निदेशक के रूप में हजारों युवकों के प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। वे बचपन से ही एक स्वाभिमानी, निष्ठावान, चरित्रवान, तपस्वी एवं समर्पित व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन की समस्त सुख–सुविधाएं, ऐश्वर्य एवं अवसरों को ठुकराकर महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज की विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया है। आज स्वामी आदित्यवेश जी को एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी गुरुकुल धीरणवास द्वारा प्रदान की गई है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सबके सहयोग से स्वामी आदित्यवेश जी इस दायित्व को पूर्ण करने में सफल होंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने चौ. हरि सिंह सैनी जी को संरक्षक चुने जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि चौ. हरि सिंह सैनी जी का गुरुकुल को संरक्षण मिलने के बाद हम सब यह अनुमान लगा सकते हैं कि अब यह गुरुकुल दिन–दोगुनी एवं रात–चौगुनी उन्नति करेगा। चौ. हरि सिंह सैनी एक स्वच्छ छवि के नेता हैं। जो महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज को समर्पित हैं। मैं उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना करता हूँ। स्वामी जी ने गुरुकुल के संस्थापक स्व. स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज को स्मरण करते हुए उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी जी ने बताया कि स्वामी सर्वदानन्द जी की तपस्या, त्याग एवं मेहनत से यह गुरुकुल आज इस विशाल स्वरूप को प्राप्त किये हुए है। स्वामी सर्वदानन्द जी ने सन् 1972 में इस गुरुकुल की स्थापना की और अपना पूरा जीवन गुरुकुल की व्यवस्था एवं संचालन में लगा दिया। उनका जीवन हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके त्याग और तप को हम श्रद्धा के साथ स्मरण करते हुए यह संकल्प लें कि गुरुकुल की उन्नति के लिए अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं से ऊपर उठकर तन–मन–धन से सहयोग करेंगे।

आज योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्माष्टी पूरे देश में धूमधाम से मनाई जा रही है। इस अवसर पर हमें योगेश्वर श्रीकृष्ण के वैदिक स्वरूप को जनता के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। योगेश्वर श्रीकृष्ण एक ऐसे महापुरुष थे जिनके जीवन में कोई दोष नहीं था। उनका जीवन आप्त पुरुषों के समान था। वे महान् नीतिज्ञ, महान योगी, महान योद्धा तथा हर स्थिति में समभाव रखने वाले अद्भुत चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी थे। सम्पूर्ण महाभारत में योगेश्वर कृष्ण का ही ऐसा व्यक्तित्व है जो किसी भी परिस्थिति में निराश, उदास या प्रभावित होते नहीं दिखते। योगेश्वर कृष्ण जन्म से मृत्यु पर्यन्त धर्म की रक्षा और अधर्म के विनाश के लिए संकल्पित रहे। उन्होंने अन्याय का डटकर विरोध किया। अन्याय को मिटाने के लिए जो भी नीति आवश्यक समझी उसका प्रयोग किया। किन्तु कभी अन्याय, अधर्म, असत्य के साथ समझौता नहीं किया। ऐसे उच्च कोटि के महापुरुष को वर्तमान के पौराणिक जगत में जिस प्रकार से लांछित, तिरस्कृत एवं अपमानित किया जा रहा है वह हम सबके लिए अत्यन्त कष्ट का विषय है। योगेश्वर कृष्ण जैसे तपस्वी, सदाचारी एवं चरित्रवान महापुरुष को राधा नाम की महिला के साथ नाचते हुए दिखाना, 16108 पत्नियाँ बताना, स्त्रियों के कपड़े चुनाने वाला कहना, महिलाओं में वेश बदलकर चुड़ी पहनाने के बहाने जाना और माखनचोर के घृणित दोष से तिरस्कृत करना इन लोगों का अक्षम्य अपराध है। आर्य समाज प्रारम्भ से ही योगेश्वर श्रीकृष्ण जी महाराज को संसार का सर्वश्रेष्ठ एवं आप्त पुरुषों के समान योगी, नीतिज्ञ एवं प्रतिभा सम्पन्न महापुरुष के रूप में मानता आया है किन्तु उनके वैदिक स्वरूप को जिस घटिया तरीके से लोग मंचों पर प्रस्तुत करते हैं उससे हमारी भावनाएँ आहत होती हैं। योगेश्वर श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी पर जिस प्रकार की रास–लीलाएँ रचाई जाती हैं उन्हें गोपियों के साथ लम्पटता करते हुए दिखाया जाता है, अश्लील एवं फूहड़ नृत्यों से मंचों की गरिमा को ठेस पहुँचाई जाती है। उससे योगेश्वर श्रीकृष्ण का तिरस्कार एवं अपमान ही नहीं बल्कि पूरे भारतीय संस्कृति का अपमान है, क्योंकि योगेश्वर श्रीकृष्ण भारतीय संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने पौराणिकों को चुनौती दी कि श्रीकृष्ण के राधा का सम्बन्ध किस आधार पर दिखाते हैं। जब पुराणों में राधा शब्द का वर्णन नहीं है तो श्रीकृष्ण जी के जीवन में रुक्मणि को दूर करके राधा को क्यों दिखाया जाता है? यदि कहीं राधा शब्द आया है तो वह वह योगेश्वर कृष्ण के मामा रायन की पत्नी के रूप में आया है, अर्थात् कृष्ण की रिश्ते में वह मामी थी। ऐसे में कृष्ण जी को लांछित करना निःसंदेह अत्यन्त कष्ट की बात है। आर्य समाज के समस्त कार्यकर्ता योगेश्वर श्रीकृष्ण के वास्तविक जीवन एवं वैदिक स्वरूप को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य करें। आज के इस कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 9 बजे यज्ञ से हुआ। यज्ञ का संचालन आचार्य देवदत्त शास्त्री जी ने बड़ी कुशलता के साथ किया और उनके साथ वैदिक विद्वान् श्री आजाद मुनि जी ने भी सहयोग दिया। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीति भोज की व्यवस्था की गई थी। गुरुकुल की स्थापना दिवस, विद्यार्य सभा के साधारण अधिवेशन एवं योगेश्वर श्रीकृष्ण के पावन अवसर पर पूरा कार्यक्रम बड़े सौहार्द एवं स्नेहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। सभी कार्यकर्ता, सदस्य एवं वरिष्ठ पदाधिकारीगण अत्यन्त उत्साहित थे और स्वामी आर्यवेश जी को पूरे कार्यक्रम को व्यस्थित संचालित करने के लिए सभी ने आभार व्यक्त किया। शांति पाठ के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्मोत्सव पर
आर्य प्रकाशन
द्वारा प्रकाशित
विश्व का सबसे विशालतम सत्यार्थ प्रकाश

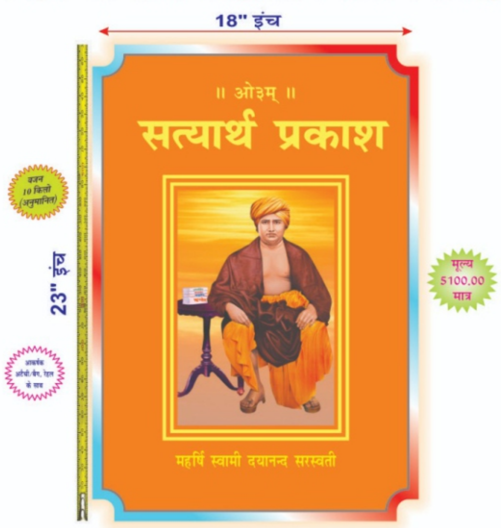

आर्य प्रकाशन
स्थापित सन्-1975
814, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-6
मुख्य कार्यालय:- S-81, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092
दूरभाष:- 011-23233280 चलभाष:- 09868244958 e-mail: aryaprakashan@gmail.com

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।